श्री राम नरेश यादव (उत्तर प्रदेश) : महोदया, माननीय सदस्य ने जो भावना व्यक्त की है, हम भी उससे सम्बद्ध करते हैं। पूरा सदन ही उससे सम्बद्ध करता है।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Including the Chair. Shri Mathur.

Condition of people of Indian Origin in Fiji

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश) : महोदया, मैं फिजी में भारतीय मूल के रहने वालों की स्थिति की ओर सदन और सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं।

आज 15 मई, 1990 है। आज के ठीक 111 साल पहले 15 मई, 1879 को पहल भारतीय वहां जाकर बसे थे। उस समय अंग्रेजी हुकूमत थी। अंग्रेजी हुकूमत मजदूरों के रूप में उनको वहां लेकर गई थी।

इन 111 सालों के भीतर भारतीय मूल के लोगों ने अपना खून-पसीना एक करके आज का आधुनिक फिजी आइलैण्ड बनाया है।

वह हर साल वहां पर अपना दिन मनाते थे। दुख यह है कि आज 15 मई, 1990 को जब 111 साल पूरे हो रहे थे, उन लोगों ने अपना दिन मनाने की अनुमति चाही। लेकिन फिजी की सरकार ने उनको यह अनुमति भी नहीं दी। इसी कारण एक दिन पहले, 14 मई को हमेशा मन्दिरों में या जो भारत के मुसलमान वहां हैं, वह मस्जिदों में देश की खुशहाली के लिये दुआ करते थे और अपने भारत के साथ बने हुए संबंधों के लिये—क्योंकि उनको आज 15 मई को इजाजत नहीं दी गयी, इसलिये उन्होंने 14 तारीख को कल रात्रि को भी मन्दिरों या मस्जिदों में कोई दुआ नहीं पढ़ी है।

उस मुल्क के अन्दर यह हालत बाहर के मुल्क के लोगों की है, जिनका कि वहां बहुमत है। भारत मूल के लोगों का वहां सब से बड़ा ग्रुप है, परन्तु उन्हें वहां गुलाम लोगों की हालत में भेज दिया गया है।

वहां के आज के प्रधान मंत्री रतु सरकाजमी का कहना यह है कि यदि भारत मूल के लोग उनकी पार्टी का साथ देते, तो शायद भारत के लोगों की आज यह हालत न होती।

इससे पहली सरकार में बवांबरा की सरकार में भारतीय मूल के लोग शामिल थे। वह पराजित हो गई। अगर वह सही तरीके से पराजित होती, तो भी हमें एतराज नहीं होता, लेकिन रबूका के नेतृत्व में क्रांति की गयी और क्रान्ति के बाद वहां का कानून बदल दिया गया। भारतीय मूल के लोगों को उनकी आबादी के अनुपात में जो रेप्रेजेंटेशन मिलना चाहिये था, वह नहीं मिला, बल्कि उनको अल्पमत में घोषित कर दिया गया।

इतना ही नहीं, महोदया, रबूका ने यह आर्डर्ज दिये थे कि जो आज चालू है, उन्होंने धमकी दी थी कि यदि हिन्दुस्तान के लोग यहां रहना चाहते हैं, तो उनको ईसाई हो जाना चाहिये। वहां का राज्य कैथोलिक है। कैथोलिक राज्य से मुझे कोई आपत्ति नहीं है। यूरोप के अन्दर इंग्लैण्ड में और न जाने कितने क्रिश्चियन कंट्रीज हैं, वहां पूरी इजाजत है, लेकिन फिजी ही एक ऐसा देश है, जहां धमकी दी गई है कि अगर भारत मूल के लोगों को वहां रहना है, अधिकार प्राप्त करने हैं, तो उन्हें अपना धर्म छोड़ देना चाहिये। हिन्दू वहां पर हिंदू न रहे और कोई मुसलमान वहां पर मुसलमान न रहे, सबको ईसाई बनना होगा, यह उनकी धमकी है।

मैं एक खबर पढ़कर सुनाना चाहता हूं। वहां के जो विरोधी दल के नेता हैं, उन्होंने भी कहा है :—

"I want to ask whether freedom of assembly is allowed in this country or is only a problem for Indians.

[श्री जगदीश प्रसाद माथुर]

क्या वहां के जो भारतीय मूल के नागरिक हैं, उनको अधिकार नहीं है ? उनका भी अधिकार उतना ही है।

तो मैं इस सदन के माध्यम से और सरकार के माध्यम से वहां के भारतीय मूल के लोगों की स्थिति के विषय में ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं और मैं कड़े से कड़े शब्दों में फिजी सरकार का जो राजनीतिक रवैया भारतीय मूल के लोगों के प्रति है, उसकी निन्दा करना चाहता हूं। मैं समझता हूं कि कि सारा सदन मेरे साथ होता और जो भारतीय मूल के लोग हैं, उनके प्रति हमारी पूरी सहानुभूति है, उनके दुख में दुख, उनके सुख में सुख —हमारा सुख और हमारा दुख है। यह बात कह कर मैं सारे सदन का ध्यान आकृष्ट करते हुए उस सरकार की निंदा करता हूं और भारतीय मूल के लोगों के साथ अपनी सहानुभूतिकट प्र करता हूं।

Disturbances in the Eastern Region of the Country

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY (Assam): Madam Deputy Chairman, I thank you for giving me this opportunity. I would like to draw the attention of the House to the deployment of Burmese Army in the Eastern sector of the country, i.e. the Mizoram border. Madam, it is a very serious situation. The Chief Minister of Mizoram, Mr Lalthanhawla, has said that the recent intrusion into the Indian territory by some Burmese Army personnel was under provocation by some extremist groups operating along the international border in the State. It is a fact that, to a certain extent, some of the extremist groups have been operating at the border, i.e. Mizoram-Burmese border in particular, the Chin Liberation Organisation (CLO) and Zomi Reunification Organisation (ZORO) have been commiting crimes in one side of the international border and then sneaking into the other side of the border after getting training.

According to some press report, the Burmese Army intrusions occurred in March this year following incidents of forceful extortion of money and arms snatching by the Army and the extremists from the people residing inside the boundaries of the Indian Union. Madam, this situation really creates a problem in the minds of the people. The people who are living inside the Indian territory have to live in constant fear with a sense of insecurity. So, I want to draw the attention of the Government to the situation which is really grave. The provocation and intrusion by the Burmese Army may create some serious problem. We can very well remember the intrusion by the Chinese Army in November, 1962. Burma is a friendly country and, therefore, peaceful co-existence is really necessary. Moreover, we know that some quantity of arms and other narcotics come through that part of the State. I think that the Government should take urgent steps in this matter. The matter should be settled immediately in an amicable way.

Alarming Rate of infant Mortality in the Country

SHRI PASUMPON THA. KIRUTTINAN (Tamil Nadu): Madam, Deputy Chairman, I am very thankful to you for having given me an opportunity to bring the very important issue of infant mortality which is high in our country as compared to other developing countries. Yesterday, i.e. on 14th May, 1990, the Statement by the hon. Minister in this House regarding infant mortality concerns all sections in this august House and outside also. According to the Statement, annual infant deaths in the country as a whole are estimated at 21.46 lakhs, that is, 5900 per day. So far as the statistics available to me are concer-